



दिल्ली में बिजली की पीक डिमांड मुंबई और चेन्नै दोनों की कंबाइंड डिमांड से भी ज्यादा

1 जुलाई को दिल्ली में बिजली की पीक डिमांड 7016 मेगावॉट के अपने पिछले रेकॉर्ड को तोड़ते हुए 7409 मेगावॉट पहुंच गई। बीआरपील की पीक डिमांड 3159 मेगावॉट हो गई, जो अब तक की सबसे ज्यादा डिमांड थी। गर्मियों में दिल्ली में बिजली की करीब 50 प्रतिशत मांग का कारण यहां का कूलिंग लोड यानी एसी, कूलर व फैन हैं।

Powering Delhi's electricity needs. Empowering progress

Delhi's peak power demand over the years



दिल्ली में बिजली की मांग

- 2002 (2879 मेगावॉट) के मुकाबले इसमें 250 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।
- यह मुंबई और चेन्नै के कंबाइंड पावर डिमांड से भी ज्यादा है।
- 2016 में पहली बार बिजली की मांग 6000 मेगावॉट पहुंची थी (6216 मेगावॉट, 1 जुलाई को)। जून 2019 में दिल्ली में बिजली की मांग ने 24 दिन 6000 मेगावॉट को क्रॉस किया।

ईएलसीबी- सुरक्षा और विमान की शांति की एक छोटी सी कीमत

घर में अर्थ लीकेज की स्थिति में बिजली के झटके लग सकते हैं, जिनसे गंभीर शारीरिक हानि पहुंच सकती है। लेकिन, इस तरह के झटकों और दुर्घटनाओं को ईएलसीबी यानी अर्थ लीकेज सर्किट ब्रेकर लगवाकर टाला जा सकता है। यह साधारण लेकिन उपयोगी उपकरण घरों में अर्थ लीकेज का पता लगा सकता है, स्वतः ट्रिप कर सकता है और संबंधित उपकरण/परिसर में बिजली की आपूर्ति को डिसकनेंक्ट कर सकता है और इस तरह गंभीर दुर्घटनाओं को होने से पहले ही रोक सकता है।

इंडियन इलेक्ट्रिसिटी रूल्स, 1956 के सेक्ष्यन 61 ए के तहत, पांच किलोवॉट और अधिक लोड वाले सभी उपभोक्ताओं के लिए, अपने परिसर में ईएलसीबी लगवाना अनिवार्य है। अपने और अपने प्रियजनों की सुरक्षा के लिए, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप ईएलसीबी लगवाएं।

www.bsesdelhi.com पर लॉगआॅन करें या कॉल करें: 39999707 / 19123

मोबाइल ऐप और वॉट्सऐप नंबरों जैसे सुविधाजनक माध्यमों से बिजली गुल की शिकायत दर्ज कराएं



टॉल फ्री 24x7
19123



वॉट्सऐप
ट्रॉफिक बिल के लिए
(Type #Bill 9 digit CA No & send to 9999919123)



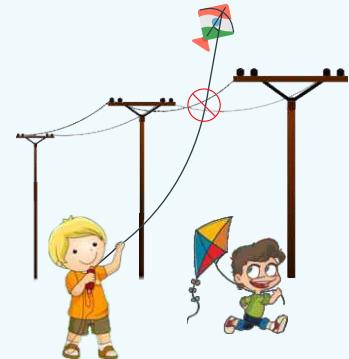
वॉट्सऐप
बिजली गुल की शिकायत करें
(Type #NC 9 digit CA No & send to 9999919123)



आपातकालीन (आग व जल्दी)
1800 10 39707

संवाद

बिजली उपकरणों के पास पतंगबाजी ना करें, सुरक्षित रहें



भारत में स्वतंत्रता दिवस के जश्न का अभिन्न हिस्सा है, पतंगबाजी। लेकिन, कभी-कभार यह काफी खतरनाक साबित हो सकती है और यहां तक कि पतंग उड़ाने वाले की मौत भी सकती है। इसका कारण है कि पतंग उड़ाने के लिए जो मांझा इस्तेमाल किया जाता है, वह आमतौर पर मेटल कोटेड होता है, जो बिजली का वाहक है। यह न सिर्फ पतंग उड़ाने वाले व्यक्ति के लिए खतरनाक है, बल्कि इससे इलाके में बिजली की आपूर्ति भी प्रभावित होती है।

- मेटल कोटेड मांझे की वजह से ट्रिपिंग हो सकती है और बिजली का करंट भी लग सकता है
- अगर 33 / 66 केवी की एक ओवरहेड लाइन ट्रिप होती है, तो उससे 10 हजार निवासियों की बिजली आपूर्ति प्रभावित हो सकती है। 11 केवी की एक लाइन ट्रिप होने से 2500 निवासियों की बिजली आपूर्ति प्रभावित हो सकती है।



इन आसान उपायों से करें डैंगु, चिकनगुनिया और मलेरिया की रोकथाम

- अपने आस-पास पानी जमा न होने दें, ये मच्छर साफ व स्थिर पानी में पैदा होते हैं
- वॉटर कूलर को हर सप्ताह रगड़कर साफ करें व सुखाएं
- घर के अंदर लगे पौधों तथा चिड़ियों के लिए रखे गए कट्टेनरों का पानी हर हफ्ते बदलें
- वॉटर टैंक/कंटेनर आदि के कवर को बंद रखें। वॉटर टैंकों को ओवरफ्लॉन होने दें
- मच्छर भगाने वाली टिकिया/मच्छरदानी का इस्तेमाल करें, ताकि मच्छर न काटें
- मच्छरों से बचने के लिए पूरी बाजू के कपड़े पहनें